बी.ए. II Hindi Hons.

संत काव्य की प्रवृत्तियाँ : [illegible]

डॉ. सतीश चन्द्र पाठक
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
एस.एस. कॉलेज, जहानाबाद

(10) नारी के प्रति दृष्टिकोण :- समस्त संत कवियों का नारी के प्रति स्वस्थ भाव नहीं दिखलाई पड़ता है। इन्होंने समवेत रूप से नारी की निंदा की है और नाना अधम जन्तुओं से उसकी तुलना की है। सच तो यह है कि समस्त संत कवि गृहस्थ जीवन यापन करने वाले थे जहाँ नारी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। नारी गृहस्थ जीवन का मेरुदंड है। फिर भी नारी के इस महत्वपूर्ण रूप के प्रति उनकी दृष्टि क्यों नहीं गयी। यह भी सत्य है कि नारी पुरुष की सबसे बड़ी कमजोरी रही है। साधना मार्ग से भटकाव का वह प्रधान कारण है। इसीलिए केवल संत काव्य में ही नहीं वरन सर्वकाल में भी नारी को साधनामार्ग की सबसे बड़ी बाधा के रूप में चित्रित किया गया है। दूसरी ओर समाज में पैठे कनफटा योगियों द्वारा होने वाले अभिचारों में नारी के प्रधान भूमिका निभाने के कारण भी इस तरह की प्रतिक्रिया संत कवियों में ~~[illegible]~~ हुई होगी। इसी का परिणाम था कि उन्होंने नारी के प्रति उदार दृष्टिकोण नहीं अपनाया और नाना रूपों में नारी को भर्त्सना करते रहे -

नारी की झाँई परत अंधा होत भुजंग।
कबिरा तिनकी कौन गत जो नित नारी के संग।।

यह बड़े आश्चर्य का विषय है कि इन्होंने नारी के सती या पतिव्रता रूप को पूजनीय एवं श्लाघास्पद माना है। पतिव्रता की एकनिष्ठता, उसका सेवाभाव तथा उसकी समर्पणशीलता उन्हें खूब आकृष्ट करती है। शायद उनकी साधना का आदर्श भी पतिव्रता भाव वाला ही है जिसके कारण वे उन्हें आदर्श मानते हैं -

पतिव्रता मैली भली, काली कुचित कुरूप।
पतिव्रता के रूप पर वारों कोटि सरूप।।

नारी के प्रति उनके इस दृष्टिकोण का कारण शायद नारी का कामिनी रूप

रहा होगा क्योंकि उस काल में नारी का रूप सामाजिक ही नहीं राजनैतिक अस्थिरता एवं युद्ध का कारण भी रहा था इसलिए भी उन्होंने नारी को इस रूप में देखा।

(11) माया से सावधानता :- समस्त संत कवियों ने माया के प्रति सावधान रहने का आह्वान किया है। मनुष्य जब साधना के पथ पर आगे बढ़ता है तभी माया विभिन्न प्रपंचों से उसे उस पथ से दूर करने का प्रयास आरंभ कर देती है। इस बिन्दु पर संपूर्ण भक्तिकाल एकमत है। चाहे तुलसी हों या सूरदास, कबीर हों या जायसी - सभी ने माया के विविध रूपों का वर्णन कर ~~उन्हें~~ इनसे सावधान रहने के लिए चेताया है। कबीर भी स्वीकारते हैं कि माया अत्यंत प्रबल होती है और नाना रूपों में प्रकट होकर साधक को उसके पथ से विचलित कर देती है। वह महाठगनी है। उसकी वाणी अत्यंत मधुर है, उसका रूप अत्यंत सुन्दर एवं प्रभावशाली है किन्तु उसका परिणाम अत्यंत दुःखदायी है। वह इतनी प्रबल एवं शक्तिमती है कि ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव भी उसके प्रभाव से नहीं बच सके तो सामान्य मनुष्य भला क्या बचेगा। यह माया भक्त और भगवान, प्रिय और प्रेमी, आत्मा और परमात्मा के मिलन में सबसे बड़ी बाधा है। इसलिए इसके सुन्दर रूप, मधुर वाणी एवं आकर्षक रूप से बचना चाहिए अन्यथा समस्त साधना धूल धूसरित हो जाएगी। इसीलिए कबीर पुकार-पुकार कर कहते हैं -

माया महा ~~ठगनी~~ ठगनी मैं जानी।
निर्गुन फांस हाथ लिए डोले बोले मधुरी बानी।

वे इस बात को भी स्वीकार करते हैं कि समस्त दृश्य जड़-चेतन माया का ही कार्य है। माया की इन्हीं शक्तियों को ध्यान में रखते हुए संतों ने उसे ठगनी, मोहिनी, व्यभिचारिणी, चांडालनी, चोरों की रही और बुद्धिविध्वंसिनी जैसे शब्दों से संबोधित किया है। यह माया जल्दी पहचान में नहीं आती -

माया बैरी राम की, ताकू लखै न कोय।
सब जग माते सोंचकरि बड़ी अचम्भो मोहि ॥"

इस प्रकार संत कवियों ने प्रतिपल माया से सावधान रहने, उसे पहचानने और उससे बचने के नाना उपायों के अनुपालन का निर्देश दिया है।